University of Technology

परिसर प्रतिध्वनि

(नवोन्मेष, युवा ऊर्जा एवं अन्तःक्रिया का अभिव्यक्ति मंच)

मासिक भित्ति पत्रिका, अंक - 21, सितंबर 2026

प्रधान संरक्षक	-	श्रीमती मीनाक्षी सुराना
प्रमुख संरक्षक	-	डॉ. प्रेम सुराना
मुख्य संरक्षक	-	डॉ. अंशु सुराना
प्रेसिडेंट	-	प्रो. (डॉ.) रश्मि जैन
प्रधान संपादक	-	प्रो. (डॉ.) अंकित गांधी
संपादक	-	डॉ. प्रेम कुमार
खेल संपादक	-	श्री यश यादव

प्रेसिडेंट का संदेश ...

प्रिय विश्वविद्यालय परिवार,

विश्वविद्यालय की मासिक भित्ति पत्रिका ‘परिसर प्रतिध्वनि’ के अंक 21 को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। यह पत्रिका विश्वविद्यालय की शैक्षणिक उपलब्धियों, शोध एवं नवाचार, सांस्कृतिक गतिविधियों, विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा तथा विश्वविद्यालय परिवार की विविध उपलब्धियों को एक मंच पर प्रस्तुत करने का महत्वपूर्ण माध्यम बन चुकी है। शैक्षणिक सत्र 2026-27 निरंतर उत्साह, सीखने और नई संभावनाओं के साथ आगे बढ़ रहा है। प्रत्येक नया दिन हमारे विद्यार्थियों के लिए कुछ नया सीखने, अपनी क्षमताओं को पहचानने और उन्हें समाज एवं राष्ट्र के हित में उपयोग करने का अवसर लेकर आता है। सितंबर का महीना हमारे लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि हम शिक्षक दिवस के माध्यम से अपने शिक्षकों के प्रति सम्मान और कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। शिक्षक केवल ज्ञान प्रदान करने वाले मार्गदर्शक ही नहीं होते, बल्कि वे विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, विचारों और भविष्य को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एक सशक्त राष्ट्र के निर्माण में शिक्षक और विद्यार्थी के बीच का यह ज्ञान-संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण है। आज के तेजी से बदलते वैश्विक परिवेश में शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो गई है। हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम ज्ञान को केवल प्राप्त न करें, बल्कि उसका सृजन करें, उसे व्यवहार में लाएँ और समाज की वास्तविक समस्याओं के समाधान में उसका उपयोग करें। विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, रचनात्मक सोच, उद्यमिता और सामाजिक उत्तरदायित्व को प्रोत्साहित करना हमारी सामूहिक प्राथमिकता होनी चाहिए। आशा है कि यह अंक सभी पाठकों को नई ऊर्जा, नए विचार और बेहतर करने की प्रेरणा प्रदान करेगा। आइए, हम सभी ज्ञान, अनुशासन, नवाचार, संवेदनशीलता और निरंतर उत्कृष्टता के मूल्यों को अपनाते हुए विश्वविद्यालय की प्रगति तथा राष्ट्र के विकास में अपना सार्थक योगदान देने का संकल्प लें।

प्रोफ़ेसर (डॉ.) रश्मि जैन
प्रेसिडेंट
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

कुलसचिव का संदेश ...

प्रिय विश्वविद्यालय परिवार,

विश्वविद्यालय की मासिक भित्ति पत्रिका ‘परिसर प्रतिध्वनि’ के अंक 21 के प्रकाशन पर समस्त विश्वविद्यालय परिवार को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। यह पत्रिका हमारे परिसर की शैक्षणिक, शोध, सांस्कृतिक, नवाचार एवं रचनात्मक गतिविधियों को साझा करने का सशक्त माध्यम है।शैक्षणिक सत्र 2026–27 निरंतर प्रगति और नई उपलब्धियों की ओर अग्रसर है। हमारा प्रयास है कि विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ कौशल, अनुशासन, नेतृत्व एवं नवाचार के अवसर भी प्राप्त हों। आज के तेजी से बदलते वैश्विक परिवेश में शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो गई है। हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम ज्ञान को केवल प्राप्त न करें, बल्कि उसका सृजन करें, उसे व्यवहार में लाएँ और समाज की वास्तविक समस्याओं के समाधान में उसका उपयोग करें। विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, रचनात्मक सोच, उद्यमिता और सामाजिक उत्तरदायित्व को प्रोत्साहित करना हमारी सामूहिक प्राथमिकता होनी चाहिए। मुझे विश्वास है कि विद्यार्थी अपनी प्रतिभा और परिश्रम से विश्वविद्यालय की गौरवशाली परंपरा को और समृद्ध करेंगे। ‘परिसर प्रतिध्वनि’ विश्वविद्यालय परिवार की उपलब्धियों और रचनात्मक प्रयासों को एक मंच प्रदान कर रही है। अंक 21 के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं सभी सहयोगियों को हार्दिक बधाई।आइए, हम सभी उत्कृष्टता, कर्तव्यनिष्ठा और निरंतर सीखने की भावना के साथ विश्वविद्यालय एवं राष्ट्र की प्रगति में अपना योगदान दें।

डॉ. अनूप शर्मा
कुलसचिव
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

'परिसर प्रतिध्वनि' का प्रत्येक अंक विश्वविद्यालय की शैक्षणिक उपलब्धियों, शोधपरक गतिविधियों, सांस्कृतिक चेतना, साहित्यिक अभिरुचियों और रचनात्मक प्रयासों का प्रतिबिंब प्रस्तुत करता है। इसी क्रम में 'परिसर प्रतिध्वनि' का यह अंक 21 विश्वविद्यालय परिवार की निरंतर सक्रियता, उपलब्धियों और नवसृजन की यात्रा को आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा है। प्रत्येक नया अंक अपने साथ नई घटनाओं, नए विचारों और नई संभावनाओं को लेकर आता है और यही इसकी सार्थकता भी है। शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान अर्जित करना नहीं, बल्कि व्यक्ति में विवेक, संवेदनशीलता, आत्मविश्वास और उत्तरदायित्व की भावना का विकास करना भी है। वर्तमान समय में जब प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमारे जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित कर रही हैं, तब शिक्षा के सामने नई चुनौतियों के साथ अनेक अवसर भी उपस्थित हुए हैं। ऐसे परिवेश में विश्वविद्यालय की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है।

नया शैक्षणिक सत्र अब अपने क्रमिक विस्तार की ओर अग्रसर है। परिसर में नवप्रवेशी विद्यार्थियों की उत्सुकता और वरिष्ठ विद्यार्थियों का अनुभव मिलकर एक ऐसी शैक्षणिक संस्कृति का निर्माण करते हैं, जिसमें सीखना केवल कक्षा तक सीमित नहीं रहता। संवाद, विचार-विमर्श, शोध, साहित्य, कला, खेल, सांस्कृतिक गतिविधियाँ तथा सामाजिक सहभागिता विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को व्यापक आयाम प्रदान करती हैं। विश्वविद्यालय का वास्तविक विकास तभी संभव है, जब यहाँ ज्ञान के साथ विचार और विचार के साथ संवेदना का भी विकास हो। इसी विश्वास के साथ विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों को ऐसे अवसर प्रदान करने के लिए निरंतर प्रयासरत है, जहाँ वे अपनी प्रतिभा और संभावनाओं को पहचान सकें तथा उन्हें समाज और राष्ट्र के हित में उपयोग कर सकें। इस अंक को आकार देने में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से सहयोग देने वाले सभी अधिकारियों, विभागाध्यक्षों, संकाय सदस्यों, कर्मचारियों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों तथा संपादकीय मंडल के सदस्यों के प्रति हम हृदय से आभार व्यक्त करते हैं। आपका सहयोग और रचनात्मक सहभागिता ही 'परिसर प्रतिध्वनि' की निरंतर यात्रा की शक्ति है। आइए, हम सभी ज्ञान को अपनी शक्ति, नवाचार को अपनी दिशा, अनुशासन को अपना आधार और संवेदनशीलता को अपना संस्कार बनाकर एक सशक्त, समावेशी और प्रगतिशील समाज के निर्माण में अपनी भूमिका निभाने का संकल्प लें।

डॉ. प्रेम कुमार
सह-आचार्य, हिंदी विभाग
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

नोट: आप सभी से विनम्र निवेदन है कि अपने बहुमूल्य सुझाव और प्रतिक्रियाएँ अवश्य प्रेषित करें, जिससे आगामी अंकों को और अधिक समृद्ध एवं उपयोगी बनाया जा सके।

राष्ट्रीय पोषण दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, वाटिका, जयपुर के स्कूल ऑफ बेसिक एंड एप्लाइड साइंसेज द्वारा राष्ट्रीय पोषण दिवस के अवसर पर दिनांक 1 सितंबर 2026 को प्रातः 11:00 बजे जी ब्लॉक सेमिनार हॉल में पोषण जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को संतुलित आहार, उचित पोषण एवं स्वस्थ जीवनशैली के महत्व के प्रति जागरूक करना था। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री धीरज कुमार नागर ने विद्यार्थियों को संतुलित एवं पौष्टिक आहार के महत्व के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि उचित पोषण स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मस्तिष्क एवं बेहतर कार्यक्षमता के लिए अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने विद्यार्थियों से अपने दैनिक जीवन में पौष्टिक आहार एवं स्वस्थ जीवनशैली को अपनाने का आह्वान किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. रजनी माथुर, डीन, स्कूल ऑफ बेसिक एंड एप्लाइड साइंसेज ने की। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में उन्होंने कहा कि युवाओं के लिए सही पोषण अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि स्वस्थ युवा ही स्वस्थ एवं सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को जंक फूड से बचने तथा संतुलित एवं पौष्टिक आहार को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाने के लिए प्रेरित किया।

इस अवसर पर डॉ. चारू दुबे एवं सुश्री मनीषा यादव ने भी पोषण एवं स्वस्थ जीवनशैली से संबंधित अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने विद्यार्थियों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहने तथा पौष्टिक आहार को प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों के लिए निबंध प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने पोषण, संतुलित आहार एवं स्वस्थ जीवनशैली जैसे विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत किए। प्रतियोगिता के माध्यम से विद्यार्थियों में पोषण संबंधी जागरूकता एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ावा दिया गया। विश्वविद्यालय की प्रेसीडेंट डॉ. रश्मी जैन एवं चेयरपर्सन डॉ. अंशु सुराना ने अपने प्रेरणादायी संदेशों के माध्यम से विद्यार्थियों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने तथा पोषण के प्रति जागरूक रहने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम का समापन स्वस्थ जीवनशैली एवं उचित पोषण को अपनाने के संकल्प के साथ हुआ। कार्यक्रम में विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की सक्रिय सहभागिता रही। "सही पोषण – स्वस्थ जीवन – सशक्त राष्ट्र"

एनएसएस द्वारा प्लास्टिक फ्री कैंपस ड्राइव का आयोजन

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी में NSS इकाई द्वारा प्रथम NSS कैंप 2026 एवं "प्लास्टिक फ्री कैंपस ड्राइव" का आयोजन उत्साहपूर्वक किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में सामाजिक सेवा, पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता एवं जिम्मेदार नागरिकता की भावना को बढ़ावा देना रहा। कार्यक्रम के अवसर पर प्रो-चेयरपर्सन डॉ. अंशु सुराना ने अपने संदेश में विद्यार्थियों को सामाजिक एवं पर्यावरणीय जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक रहने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि युवाओं की सक्रिय भागीदारी से समाज में सकारात्मक और स्थायी बदलाव लाया जा सकता है।

इसके पश्चात प्रेसिडेंट डॉ. रश्मि जैन ने विद्यार्थियों को NSS की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने तथा समाज एवं पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझने का संदेश दिया। कार्यक्रम की शुरुआत NSS कार्यक्रम अधिकारी यश यादव द्वारा की गई। उन्होंने विद्यार्थियों को NSS (National Service Scheme) के उद्देश्य, कार्यप्रणाली एवं सामाजिक सेवा में इसकी भूमिका के बारे में जानकारी दी। साथ ही विद्यार्थियों को My Bharat Portal के माध्यम से NSS एवं विभिन्न सामाजिक गतिविधियों के लिए पंजीकरण करने की प्रक्रिया के बारे में बताया गया।

कार्यक्रम के अगले चरण में डॉ. प्रेम कुमार ने प्लास्टिक प्रदूषण, प्लास्टिक के पर्यावरण पर दुष्प्रभाव तथा प्लास्टिक के उपयोग को कम करने के उपायों पर महत्वपूर्ण व्याख्यान दिया। इसके बाद डॉ. मोनिका शर्मा ने भी प्लास्टिक मुक्त परिसर की आवश्यकता, स्वच्छता एवं पर्यावरण संरक्षण पर विद्यार्थियों को संबोधित किया। इस अवसर पर NSS स्वयंसेविका तनिषा मीणा ने प्लास्टिक फ्री अभियान को लेकर अपने विचार साझा किए। उन्होंने विद्यार्थियों से अपने दैनिक जीवन में प्लास्टिक का उपयोग कम करने और स्वच्छ एवं स्वस्थ वातावरण बनाए रखने में योगदान देने की अपील की। स्वच्छता अभियान का दूसरा चरण : NSS कैंप के दूसरे चरण में विद्यार्थियों एवं NSS स्वयंसेवकों ने विश्वविद्यालय परिसर में स्वच्छता अभियान चलाया। स्वयंसेवकों ने परिसर एवं आसपास के क्षेत्रों में बिखरे हुए प्लास्टिक कचरे को एकत्र किया तथा उसे उचित तरीके से अलग कर निस्तारण के लिए भेजा। विद्यार्थियों ने पूरे उत्साह के साथ अभियान में भाग लेते हुए "स्वच्छ परिसर, स्वस्थ पर्यावरण" तथा 'प्लास्टिक मुक्त परिसर' का संदेश दिया। अभियान के दौरान स्वयंसेवकों ने अन्य विद्यार्थियों एवं परिसर के लोगों को भी प्लास्टिक कचरे को खुले में न फेंकने और कचरे का उचित निस्तारण करने के लिए जागरूक किया। कार्यक्रम के अंत में NSS कार्यक्रम अधिकारी यश यादव ने सभी NSS स्वयंसेवकों, विद्यार्थियों एवं विश्वविद्यालय के स्टाफ का आभार व्यक्त किया और कार्यक्रम को सफल बनाने में उनके सहयोग के लिए धन्यवाद दिया। यह NSS कैंप विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व, स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण और सामुदायिक सेवा की भावना विकसित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल रहा।

Life Without Television: A Lesson in Simplicity and Dedication by Dr. Kalam

Dr. A.P.J. Abdul Kalam, respected as India's 'Missile Man' and former President of India, led a life marked by simplicity, discipline, and strong values. Interestingly, he never watched television throughout his lifetime—a choice that reflected his focused mindset and purposeful living. In an era when television is a common source of entertainment and distraction, Dr. Kalam consciously avoided it. He preferred to spend his time engaging in reading, scientific research, writing, and meaningful conversations, especially with students and youth. He believed that television could divert attention and reduce productive thinking. For him, learning and personal growth were far more valuable than passive entertainment. Rather than relying on screens, Dr. Kalam found inspiration in books and the pursuit of knowledge. His ability to stay away from distractions allowed him to make historic contributions to India's space and defense programs. His lifestyle demonstrated that discipline and determination are the real foundations of success. Dr. Kalam's example teaches us that focusing on goals and using time wisely leads to greatness. His life is a powerful reminder for today's generation: meaningful achievement comes not from entertainment but from dedication, learning, and a deep sense of purpose.

Dr. Prem Kumar
Associate Professor
School of Humanities, Arts and Social Sciences

शिक्षकों के सम्मान में गरिमामय कार्यक्रम का आयोजन

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी में शिक्षक दिवस के अवसर पर शिक्षकों के सम्मान में एक गरिमामय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के प्रो-प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी ने की। कार्यक्रम का उद्देश्य विश्वविद्यालय के विकास में शिक्षकों एवं सभी फैकल्टी सदस्यों के योगदान को सम्मानित करना और उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना था। कार्यक्रम की रूपरेखा डॉ. रजनी माथुर द्वारा तैयार की गई तथा डॉ. प्रेम कुमार ने मंच संचालन किया। इस अवसर पर डॉ. वंदना सिंह ठाकुर, डॉ. रजनी माथुर, डॉ. मोनिका शर्मा, डॉ. सीता राम, डॉ. कुलदीप शर्मा, डॉ. रोहित सारस्वत एवं श्री अखिलेश ने अपने विचार व्यक्त किए तथा शिक्षक दिवस के महत्व और शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों की भूमिका पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय के सभी फैकल्टी सदस्यों को प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस पहल का मुख्य संदेश यह रहा कि विश्वविद्यालय की प्रगति एवं विकास में प्रत्येक फैकल्टी सदस्य का महत्वपूर्ण योगदान होता है और इसलिए प्रत्येक व्यक्ति प्रशंसा एवं सम्मान का पात्र है। इस अवसर पर प्रेसिडेंट डॉ. रश्मि जैन एवं प्रो-चेयरपर्सन डॉ. अंशु सुराना ने अपने संदेश के माध्यम से सभी शिक्षकों को शिक्षक दिवस की शुभकामनाएं दीं और उनके समर्पण, योगदान एवं सेवाओं की सराहना की। कार्यक्रम का समापन सभी शिक्षकों के प्रति सम्मान एवं आभार व्यक्त करते हुए किया गया। यह समारोह विश्वविद्यालय परिवार के लिए शिक्षकों के योगदान को पहचानने, प्रोत्साहित करने और सम्मानित करने का प्रेरणादायी अवसर बना।

उत्साह एवं उमंग के साथ आयोजित हुआ नवागंतुक स्वागत समारोह

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, वाटिका, जयपुर के स्कूल ऑफ बेसिक एंड एप्लाइड साइंसेज एवं स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज के संयुक्त तत्वावधान में 12 सितंबर 2026 को ई-ब्लॉक स्थित सेमिनार हॉल में नवागंतुक स्वागत समारोह का आयोजन हर्षोल्लास के साथ किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य नवप्रवेशित विद्यार्थियों का विश्वविद्यालय परिवार में आत्मीय स्वागत करना तथा उनकी प्रतिभा और रचनात्मकता को मंच प्रदान करना था। कार्यक्रम का शुभारंभ स्कूल ऑफ बेसिक एंड एप्लाइड साइंसेज की अधिष्ठाता डॉ. रजनी माथुर के स्वागत उद्बोधन से हुआ। उन्होंने सभी नवागंतुक विद्यार्थियों का हार्दिक स्वागत करते हुए उन्हें विश्वविद्यालय की शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की प्रेसिडेंट प्रोफेसर (डॉ.) रश्मि जैन ने अपने प्रेरणादायक उद्बोधन से विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया। उन्होंने विद्यार्थियों को आत्मविश्वास, अनुशासन, सकारात्मक सोच एवं निरंतर प्रयास के साथ अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ दीं।

प्रो-चेयरपर्सन डॉ. अंशु सुराना का प्रेरणादायक संदेश भी विद्यार्थियों के लिए प्रस्तुत किया गया। उन्होंने नवागंतुक विद्यार्थियों का विश्वविद्यालय परिवार में स्वागत करते हुए उनके सफल एवं सुखद शैक्षणिक जीवन की मंगलकामना दी। कार्यक्रम का मंच संचालन छात्रा रिहान अफरीन द्वारा प्रभावशाली ढंग से किया गया। विद्यार्थियों ने गायन, नृत्य, नाटक एवं रैम्प वॉक सहित विभिन्न सांस्कृतिक एवं मनोरंजक प्रस्तुतियों में उत्साहपूर्वक भाग लिया। विद्यार्थियों की प्रतिभापूर्ण

प्रस्तुतियों ने समारोह को जीवंत एवं यादगार बना दिया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में विज्ञान समन्वयक डॉ. चारु दुबे, सुश्री मनीषा यादव तथा स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज की सुश्री खुशबू चौधरी का महत्वपूर्ण योगदान रहा। जलपान व्यवस्था में विद्यार्थियों हर्षित, यतेंद्र, भरत एवं सुनील तथा संकाय सदस्य वेद प्रकाश ने सराहनीय सहयोग प्रदान किया।

कार्यक्रम के अंत में स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रेम कुमार ने आभार प्रदर्शन करते हुए विश्वविद्यालय की अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, अधिष्ठाता, सभी संकाय सदस्यों, विद्यार्थियों एवं आयोजन से जुड़े सभी सहयोगियों का धन्यवाद किया। नवागंतुक स्वागत समारोह विद्यार्थियों के लिए उत्साह, उमंग, मनोरंजन और नए परिचयों से भरा रहा। कार्यक्रम ने नवप्रवेशित विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, रचनात्मकता, सहभागिता एवं टीम भावना को बढ़ावा देने के साथ उनके विश्वविद्यालय जीवन की एक सुखद एवं यादगार शुरुआत की।

फार्मेसी छात्रों ने किया डीडी फार्मास्युटिकल्स का औद्योगिक भ्रमण

दिनांक 12 सितंबर 2026 को यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी के फार्मेसी विभाग द्वारा छात्र-छात्राओं के व्यावहारिक ज्ञान को बढ़ावा देने के लिए आज एक दिवसीय औद्योगिक भ्रमण (Industrial Visit) का सफल आयोजन किया गया। इस शैक्षणिक दौरे के तहत डी.फार्मा और बी.फार्मा के विद्यार्थियों ने जयपुर के सीतापुरा रीको इंडस्ट्रियल एरिया स्थित प्रसिद्ध दवा निर्माता कंपनी 'डीडी फार्मास्युटिकल्स' का दौरा किया। औद्योगिक भ्रमण के दौरान छात्र-छात्राओं को फार्मास्युटिकल इंडस्ट्री के कामकाज को करीब से देखने का अवसर मिला। कंपनी के विशेषज्ञों की देखरेख में छात्रों ने टैबलेट (Tablets), कैप्सूल (Capsules) और इंजेक्शन (Injections) के निर्माण की अत्याधुनिक व संपूर्ण ऑटोमेटिक प्रक्रिया को लाइव देखा और समझा। इसके साथ ही, विद्यार्थियों को दवाओं की शुद्धता सुनिश्चित करने वाली गुणवत्ता नियंत्रण (Quality Control - QC) और गुणवत्ता आश्वासन (Quality Assurance - QA) जैसी महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं के बारे में भी विस्तार से व्यावहारिक जानकारी दी गई।

इस अवसर पर प्रो चेयरपर्सन डॉ. अंशु सुराना जी ने कहा- "हमारा उद्देश्य केवल किताबी ज्ञान देना नहीं, बल्कि छात्रों को वैश्विक स्तर की इंडस्ट्री के लिए तैयार करना है। इस तरह के औद्योगिक भ्रमण से विद्यार्थियों में प्रैक्टिकल स्किल और कॉन्फिडेंस आता है, जो उनके भविष्य के लिए बेहद जरूरी है।" प्रेसिडेंट प्रोफ़ेसर रश्मि जैन ने अपने वक्तव्य में कहा- "फार्मास्युटिकल सेक्टर तेजी से बदल रहा है। छात्रों के लिए यह जानना जरूरी है कि आज की मॉडर्न इंडस्ट्री में किस तरह से काम होता है। डीडी फार्मास्युटिकल्स का यह दौरा छात्रों को दवाओं के रिसर्च, प्रोडक्शन और क्वालिटी कंट्रोल को गहराई से समझने में मददगार साबित होगा।" फार्मेसी विभाग के प्राचार्य डॉ. राम गर्ग ने कहा- "इस विजिट के माध्यम से छात्रों ने क्लासरूम में पढ़ी थ्योरी को असल में जमीन पर काम करते देखा है। हमें खुशी है कि हमारे छात्रों ने पूरी उत्सुकता के साथ दवाओं के निर्माण की हर बारीकी को समझा और फार्मा जगत की नई तकनीकों से रूबरू हुए।" इसके अलावा प्रोफेसर अखिलेश गोयल, प्रोफेसर गजेंद्र त्यागी सहित फार्मेसी विभाग के समस्त टीचिंग व नॉन-टीचिंग स्टाफ ने इस भ्रमण को सफल बनाने में अपना पूर्ण सहयोग दिया।

'साइबर सिक्योर राजस्थान 2026' कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक 15 सितंबर 2026 को यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर की NSS इकाई द्वारा विद्यार्थियों को साइबर अपराधों के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से 'साइबर सिक्योर राजस्थान 2026' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों को ऑनलाइन धोखाधड़ी, डिजिटल सुरक्षा और साइबर अपराध से बचाव के विभिन्न उपायों की जानकारी दी गई। प्रो-चेयरपर्सन डॉ. अंशु सुराना ने कहा कि आज के डिजिटल युग में साइबर सुरक्षा केवल तकनीकी विषय नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है। विद्यार्थियों को डिजिटल संसाधनों का उपयोग करते समय सतर्क रहना चाहिए और साइबर अपराध के प्रति जागरूकता को समाज तक पहुंचाने में अपनी भूमिका निभानी चाहिए। प्रेसिडेंट प्रोफेसर डॉ. रश्मि जैन ने कहा कि विश्वविद्यालय विद्यार्थियों के शैक्षणिक विकास के साथ-साथ उन्हें जिम्मेदार और जागरूक नागरिक बनाने के लिए भी प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि सतर्कता, जागरूकता और सही जानकारी ही साइबर अपराध से बचाव का सबसे प्रभावी माध्यम है।

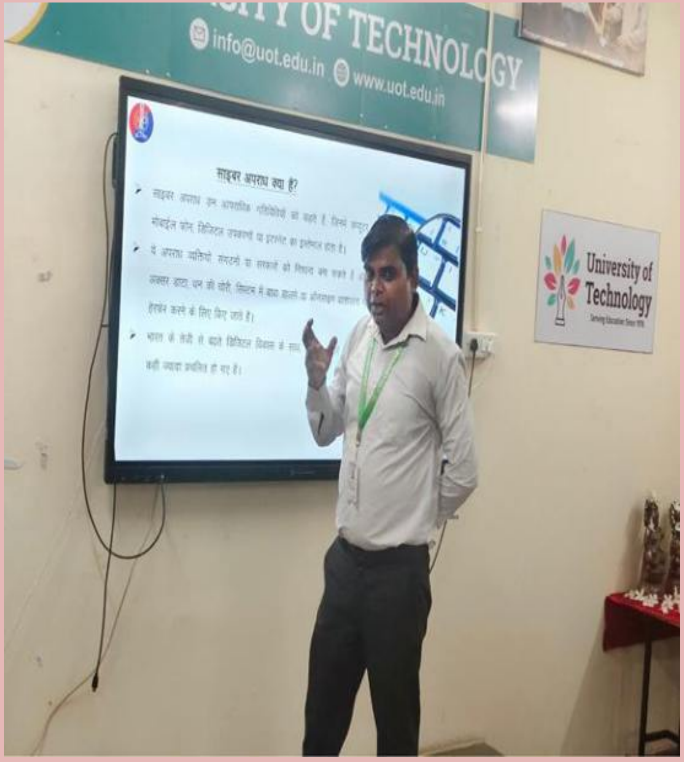

प्रो-प्रेसिडेंट प्रोफेसर डॉ. अंकित गांधी ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि इंटरनेट और डिजिटल भुगतान का उपयोग करते समय सावधानी बरतना बेहद जरूरी है। उन्होंने विद्यार्थियों से अपील की कि वे स्वयं साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूक रहें और अपने परिवार एवं आसपास के लोगों को भी साइबर फ्रॉड से बचाव के उपायों के बारे में जागरूक करें। कार्यक्रम के दौरान NSS Programme Officer श्री यश यादव ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए साइबर फ्रॉड के बढ़ते मामलों और उनसे बचने के महत्वपूर्ण तरीकों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि वे किसी भी अनजान व्यक्ति के साथ OTP, UPI PIN, बैंकिंग पासवर्ड अथवा अन्य गोपनीय जानकारी साझा न करें। साथ ही, संदिग्ध लिंक पर क्लिक करने और अनजान QR कोड स्कैन करने से बचने के लिए भी जागरूक किया। इस अवसर पर डॉ. प्रेम कुमार ने भी विद्यार्थियों के साथ अपने विचार साझा करते हुए कहा कि डिजिटल तकनीक हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी है, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति का डिजिटल रूप से जागरूक और सतर्क होना आवश्यक है। उन्होंने विद्यार्थियों को साइबर अपराध की स्थिति में घबराने के बजाय सही प्रक्रिया अपनाने और समय पर शिकायत करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों को साइबर फ्रॉड से संबंधित एक लघु जागरूकता वीडियो भी दिखाया गया। वीडियो के माध्यम से विद्यार्थियों को बताया गया कि साइबर ठगी किस प्रकार की जा सकती है, ऐसी स्थिति में स्वयं को कैसे सुरक्षित रखा जाए तथा साइबर अपराध होने पर क्या कदम उठाए जाने चाहिए। विद्यार्थियों ने वीडियो के माध्यम से साइबर सुरक्षा से जुड़े व्यावहारिक पहलुओं को समझा।

उत्साह और उमंग के साथ मनाया गया राष्ट्रीय हिंदी दिवस कार्यक्रम

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर में 15 सितम्बर 2026 को मानविकी, कला एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ की ओर से राष्ट्रीय हिंदी दिवस बड़े उत्साह, उमंग और गरिमामय वातावरण में मनाया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य हिंदी भाषा के महत्व, उसकी समृद्ध साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विरासत तथा वर्तमान समय में हिंदी की उपयोगिता के प्रति विद्यार्थियों और विश्वविद्यालय परिवार में जागरूकता एवं सम्मान की भावना विकसित करना रहा। इस अवसर पर विश्वविद्यालय परिसर हिंदीमय वातावरण से सराबोर रहा तथा विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने विभिन्न गतिविधियों में उत्साहपूर्वक सहभागिता की। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ हुआ। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के प्रो-चेयरपर्सन डॉ. अंशु सुराना ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी भारत की सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक एकता और भावनात्मक जुड़ाव की सशक्त भाषा है। उन्होंने कहा कि हिंदी को केवल अभिव्यक्ति एवं संवाद के माध्यम के रूप में नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान, परंपरा और संस्कारों को नई पीढ़ी तक पहुँचाने वाली भाषा के रूप में देखना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों को हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए प्रेरित किया।

विश्वविद्यालय की प्रेसिडेंट प्रोफेसर (डॉ.) रश्मि जैन ने राष्ट्रीय हिंदी दिवस की शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि हिंदी भारतीय संस्कृति और विविधता में एकता की महत्वपूर्ण संवाहक भाषा है। उन्होंने कहा कि बदलते वैश्विक परिवेश में हिंदी का महत्व निरंतर बढ़ रहा है। डिजिटल माध्यमों, शिक्षा, साहित्य, मीडिया, तकनीक और संचार के विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी के प्रयोग की संभावनाएँ तेजी से विस्तृत हो रही हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से आग्रह किया कि वे हिंदी भाषा के प्रति गर्व की भावना रखते हुए इसके समृद्ध साहित्य और ज्ञान परंपरा से जुड़ें तथा हिंदी को आधुनिक तकनीक और नवाचार के साथ आगे बढ़ाने में अपनी भूमिका निभाएँ। प्रो-प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी ने अपने संबोधन में कहा कि आज हिंदी केवल भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी अपनी प्रभावशाली उपस्थिति दर्ज करा रही है। इंटरनेट, सोशल

मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म के विस्तार ने हिंदी के प्रयोग को नए आयाम प्रदान किए हैं। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. अनूप शर्मा ने कहा कि युवा पीढ़ी हिंदी के साथ तकनीकी एवं व्यावसायिक कौशल को जोड़कर रोजगार और उद्यमिता के नए अवसरों का सृजन कर सकती है।

मानविकी, कला एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ के अध्यक्ष डॉ. प्रेम कुमार ने हिंदी दिवस के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी हमारी संवेदनाओं, विचारों और सांस्कृतिक चेतना को अभिव्यक्त करने वाली समृद्ध भाषा है। उन्होंने विद्यार्थियों को हिंदी के साहित्यिक, सामाजिक और वैश्विक महत्व से परिचित कराया तथा कहा कि हिंदी को विश्वस्तर पर और अधिक प्रतिष्ठित बनाने में युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है। उन्होंने विद्यार्थियों से हिंदी में अध्ययन, लेखन, पठन-पाठन और सृजनात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देने का आह्वान किया। राष्ट्रीय हिंदी दिवस के अवसर पर श्री वेद प्रकाश चौधरी (सहायक आचार्य, मानविकी, कला एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ) के निर्देशन में विभिन्न रचनात्मक एवं साहित्यिक गतिविधियों का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों के लिए हिंदी कविता-पाठ, निबंध लेखन, चित्रकारी एवं अन्य रचनात्मक प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। विभिन्न संकायों के विद्यार्थियों ने इन प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लिया। कविता-पाठ के माध्यम से विद्यार्थियों ने देशप्रेम, प्रकृति, सामाजिक सरोकार, मानवीय संवेदनाओं और समकालीन जीवन से जुड़े विषयों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। निबंध लेखन प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने हिंदी की वर्तमान प्रासंगिकता, डिजिटल युग में हिंदी की भूमिका, मातृभाषा का महत्व तथा हिंदी के वैश्विक विस्तार जैसे विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए। चित्रकारी प्रतियोगिता में भी विद्यार्थियों ने अपनी सृजनात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन

करते हुए हिंदी भाषा एवं भारतीय संस्कृति से संबंधित विषयों को कलात्मक रूप में प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने हिंदी भाषा के अधिकाधिक प्रयोग, हिंदी साहित्य के अध्ययन तथा हिंदी के प्रचार-प्रसार के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। कार्यक्रम ने विद्यार्थियों में अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति आत्मीयता एवं गौरव की भावना को मजबूत किया। साथ ही, यह संदेश भी दिया गया कि हिंदी का विकास केवल सरकारी या शैक्षणिक स्तर तक सीमित न रहकर समाज, तकनीक, रोजगार, शोध और डिजिटल दुनिया के प्रत्येक क्षेत्र में होना चाहिए। कुशलतापूर्वक मंच संचालन एवं कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन मानविकी, कला एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ की सहायक आचार्य सुश्री खुशबू चौधरी द्वारा प्रस्तुत किया गया।

उन्होंने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए विश्वविद्यालय प्रशासन, सभी पदाधिकारियों, शिक्षकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि हिंदी का सम्मान केवल हिंदी दिवस तक सीमित न रहकर हमारे दैनिक व्यवहार, अध्ययन, लेखन और कार्य-संस्कृति का हिस्सा बनना चाहिए। इस प्रकार यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर में राष्ट्रीय हिंदी दिवस-2026 का आयोजन हिंदी भाषा के प्रति सम्मान, गौरव और जागरूकता की भावना को सुदृढ़ करने वाला प्रेरणादायी एवं सफल आयोजन रहा। कार्यक्रम ने विद्यार्थियों को हिंदी की समृद्ध परंपरा से जोड़ने के साथ-साथ आधुनिक एवं डिजिटल युग में हिंदी की बढ़ती संभावनाओं को समझने का अवसर प्रदान किया।

'मानसिक क्रूरता तलाक का आधार है' विषय पर इंटर-क्लास मूट कोर्ट प्रतियोगिता आयोजित

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर के विधि विभाग की ओर से मंगलवार, 15 सितंबर 2026 को "Mental Cruelty as a Ground for Divorce" (मानसिक क्रूरता तलाक का आधार है) विषय पर इंटर-क्लास मूट कोर्ट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय द्वारा जारी सूचना के अनुसार, विधि विभाग के विद्यार्थियों के लिए इस शैक्षणिक गतिविधि का आयोजन 15 सितंबर 2026 को किया गया। कार्यक्रम प्रातः 11:00 बजे से दोपहर 3:30 बजे तक आयोजित हुआ, जिसमें विधि विभाग के विद्यार्थियों ने उत्साह, अनुशासन एवं सक्रिय सहभागिता के साथ भाग लिया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को विधिक ज्ञान के व्यावहारिक अनुप्रयोग, न्यायालयीन प्रक्रिया, कानूनी शोध, तर्क-वितर्क तथा प्रभावी मौखिक वकालत का अनुभव प्रदान करना रहा। मूट कोर्ट के माध्यम से विद्यार्थियों को वास्तविक न्यायालयीन वातावरण के अनुरूप अपने पक्ष को प्रस्तुत करने तथा विधिक मुद्दों का तार्किक एवं विश्लेषणात्मक ढंग से अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. अभिलाषा वैष्णव द्वारा अतिथियों, निर्णायक, संकाय सदस्यों एवं प्रतिभागी विद्यार्थियों के स्वागत के साथ हुआ। उन्होंने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए मूट कोर्ट प्रतियोगिता के शैक्षणिक एवं व्यावहारिक महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि विधि विद्यार्थियों के लिए ऐसी गतिविधियाँ उनके ज्ञान को व्यवहार से जोड़ने तथा न्यायालयीन कार्यप्रणाली को समझने का प्रभावी माध्यम हैं। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के प्रो-चेयरपर्सन डॉ. अंशु सुराना ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि मूट कोर्ट जैसी गतिविधियाँ विधि विद्यार्थियों के शैक्षणिक एवं व्यावसायिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उन्होंने कहा कि विधि का अध्ययन केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि विद्यार्थियों को न्यायालयीन प्रक्रिया, कानूनी शोध, विधिक तर्क और प्रभावी वकालत का व्यावहारिक अनुभव भी प्राप्त करना आवश्यक है। उन्होंने विद्यार्थियों को ऐसे आयोजनों में सक्रिय रूप से भाग

लेने और अपने विधिक ज्ञान, तार्किक क्षमता तथा संप्रेषण कौशल को निरंतर विकसित करने के लिए प्रेरित किया।

विश्वविद्यालय की प्रेसिडेंट प्रोफेसर (डॉ.) रश्मि जैन ने प्रतियोगिता के आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि अनुभवात्मक एवं व्यावहारिक शिक्षा विधि शिक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा है। उन्होंने कहा कि मूट कोर्ट जैसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों को केवल कानून की धाराओं का ज्ञान ही नहीं देतीं, बल्कि उन्हें कानूनी शोध, तार्किक चिंतन, विश्लेषणात्मक क्षमता, आत्मविश्वास और प्रभावी मौखिक प्रस्तुतीकरण जैसे आवश्यक कौशल विकसित करने का अवसर भी प्रदान करती हैं। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के आयोजन विद्यार्थियों को भविष्य में एक जिम्मेदार, कुशल एवं संवेदनशील विधि पेशेवर बनने के लिए तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी विद्यार्थियों तथा कार्यक्रम को सफल बनाने वाले संकाय सदस्यों को शुभकामनाएँ दीं। मूट कोर्ट प्रतियोगिता का निर्णयन डॉ. कमल किशोर जांगिड़, परीक्षा नियंत्रक द्वारा किया गया। उन्होंने प्रतिभागी विद्यार्थियों के प्रदर्शन का विभिन्न महत्वपूर्ण मापदंडों के आधार पर मूल्यांकन किया। इनमें कानूनी शोध, विधिक प्रावधानों की समझ, न्यायिक दृष्टांतों का प्रयोग, विधिक व्याख्या, तर्क प्रस्तुत करने की क्षमता, विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण, प्रत्युत्तर देने की क्षमता, संप्रेषण कौशल तथा न्यायालयीन शिष्टाचार प्रमुख रहे। प्रतियोगिता के दौरान विद्यार्थियों ने अपने-अपने पक्ष में प्रभावशाली एवं तर्कपूर्ण विधिक दलीलें प्रस्तुत कीं। प्रतिभागियों ने मानसिक क्रूरता की अवधारणा, वैवाहिक विवादों में इसके प्रभाव तथा तलाक के आधार के रूप में इसकी विधिक प्रासंगिकता का विस्तार से विश्लेषण किया। विद्यार्थियों ने अपने तर्कों को विधिक प्रावधानों एवं प्रासंगिक न्यायिक दृष्टांतों के आधार पर प्रस्तुत करते हुए अपनी शोध एवं वकालत क्षमता का प्रदर्शन किया।